ज्ञानविविधा
रचना, आलोचना और शोध की त्रैमासिक पत्रिका

Online ISSN : 3048-4537
July-September 2024 : 1(4)20-22

©2024 Gyanvividha
www.gyanvividha.com

सूफिया खातून
शोधार्थी,
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय,
दरभंगा, बिहार।

Corresponding Author :
सूफिया खातून
शोधार्थी,
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय,
दरभंगा, बिहार।

हिंदी ग़ज़ल: विकास, परंपरा और प्रासंगिकता

"आधुनिक भावबोध, युगबोध, रागबोध, तत्वबोध यानी जितने भी तरह के आधुनिक बोध हैं और जो आधुनिक संवेदना हैं, उन सबका स्थाई भाव एक ही है, उब यानी बोरडम या उससे भी अधिक अर्थ-विस्तार लिए हुए सीधे फ्रेंच से अंग्रेजी में आनेवाला शब्द, आंवी।"[1]

आधुनिक बोध भारत में 18शती की बाद की परिस्थितियों में पैदा हुई चेतना है। आधुनिक काल से तात्पर्य आधुनिक भावबोध और जीवन-दृष्टि। आधुनिक काल में भारत की प्रबुद्ध लोगों की चेतना बढ़ रही थी। इस काल में साहित्य जन जीवन से जुड़ रही थी। आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी ने कहा है कि "प्रत्येक देश का साहित्य वहां की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिम्ब होता है।"[2] इस उक्ति को ध्यान में रखकर ही ज्यादातर साहित्यकार साहित्य कर्म करते हैं। हिंदी साहित्य का इतिहास इस बात का साक्षी है, की हिंदी में अनेक विधाओं का समावेश तथा पोषण हुआ, अनेक आंदोलन एवं वाद आएं। ग़ज़ल हिंदी की अपनी विधा नही है। "यह उर्दू की प्रमुख विधा है। उर्दू में ग़ज़ल की परंपरा फारसी से आई।"[3] फारसी ग़ज़ल की परंपरा जब उर्दू में आई तो भारत के विभिन्न साहित्यिक केंद्रों पर इसका विकास एवं परिस्कार हुआ। उर्दू फारसी ग़ज़ल के समानांतर हिंदी में यह परंपरा 13वी शताब्दी से स्फूट रूप में विकसित होती आ रही है। ग़ज़ल अरब की एक ऐसी साहित्यिक विधा है जिसमे कम शब्दों में पूरी बात कहने की ताकत होती है। ग़ज़ल का शाब्दिक अर्थ महबूब से बातें करना है। इसमें दो मिसरे होते हैं, इसके पहले शेर को मतला और अंतिम शेर जिसमे शायर अपना नाम इस्तेमाल करते हैं उसको मकता या मकते का शेर कहते हैं। एक ग़ज़ल में कम से कम पांच शेर होते हैं। हिंदी में जिन्होंने पहले ग़ज़ल लिखा है उनमें सबसे पहला नाम अमीर खुसरो का आता है। अमीर खुसरो ने जो गजलें लिखी हैं, उनके एक मिसरे में हिंदी तो दूसरे मिसरे में फारसी शब्द होते थे जैसे- 'शबान हिजरा दराजु यूं जुल्फ बरोजे

बसलत यू उम्र कोतह।
सखी पिया को जो मैं न देखूं तो कैसे काटू अंधेरी रतियां'।।

इनके बाद भक्तिकालीन कवियों में जैसे मीराबाई के कुछ पदों में ग़ज़ल के बहर देखने को मिलते हैं। कबीर की गजलें भी हिंदी में है। उदाहरण –

"हमन है इश्क मश्ताना हमन को होशियारी क्या
रहे आजाद या जग से हमन दुनिया से यारी क्या"

इनके पश्चात आधुनिक काल में मुख्य रूप से भारतेंदु हरिश्चंद्र ने हिंदी में गजलें लिखी। इनके बाद जयशंकर प्रसाद और सूर्यकांत त्रिपाठी ' निराला ' की भी गजलें महत्वपूर्ण है, लेकिन अभी तक ग़ज़ल अपने मूल स्वरूप अर्थात प्रेम की गीत के रूप में ही लिखी जाती थी, लेकिन जब हिंदी ग़ज़ल के क्षेत्र में दुष्यंत कुमार का आगमन होता है तब ग़ज़ल का कथ्य बदलता है और पहली बार ग़ज़ल में आम आदमी के दुख दर्द को शामिल करके दुष्यंत ने हिंदी ग़ज़ल को माशूक की जुल्फों से उठाकर भूख के दरवाजे पर पटक दिया। वे कहते हैं-

"ये अब फिक्र और उदासी का दौर है
फिर कैसे तुमपे शेर कहें रीझते हुए।"

दुष्यंत ने हिंदी ग़ज़ल और गजलकारों की दशा और दिशा ही बदल कर रख दी और उनकी परंपरा में जो रचनाकार आएं उन्होंने भी अब ग़ज़ल को महबूब तक महदूद रखना मुनासिब नही समझा और इस तरह ग़ज़ल विधा आधुनिकता बोध से जुड़ते हुए जन समुदाय के मुद्दे से जुड़ने लगी क्योंकि एक रचनाकार समाज का प्रहरी होता है, वो अपने आस पास हो रही घटनाओं को बहुत बारीकी से देख और समझ रहा होता है या यूं कहें कि एक रचनाकार समाज का प्रतिनिधित्व करता है। आम लोग जो बातें नही कह पातें, जो सवाल नहीं पूछ पाते हैं वही सवाल एक रचनाकार सत्ता में बैठे लोग हों या व्यवस्था देखने वाले, उनसे पूछने में डरते नहीं और बेबाकी से अपनी लेखनी की सहायता से पूछते हैं। ग़ज़ल के कथ्य या स्वरूप का बदलना आधुनिकता का बोध कराता है क्योंकि आधुनिकता परंपरा को ज्यों का त्यों स्वीकार नहीं करती उससे प्रश्न करती है। प्रश्नशीलता आधुनिक भाव बोध की अभिव्यक्ति की विशेष युक्ति है। आधुनिकता में विद्रोह और विक्षोम का विशेष अनुभव भी शामिल है। आधुनिक भाव बोध से ओत-प्रोत हिंदी गजलों की जो दिशा कभी दुष्यंत कुमार से आगे बढ़ते हुए हिंदी के अनेक समर्थ गजलकारों ने अपनी अभिव्यक्ति दी वह आज जन चेतना से समृद्ध एक सफल विधा है, जिसके माध्यम से राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में समसामयिक संदर्भों, बदलते हुए जीवन मूल्यों, आधुनिक महानगरीय सभ्यता के दुष्परिणामों तथा सर्वहारा वर्ण के जीवन से गृहित क्षणों की यथार्थ प्रस्तुति हो सकी है। हिंदी ग़ज़ल की परंपरा का जो स्वरूप आज हमारे सम्मुख विद्यमान है, उसे देखकर लगता है की हिंदी ग़ज़ल आज पाटली हथेलियों पर चित्रित मेंहदी की दंतकथा नहीं, अपितु भाषा के भोजपत्र पर अंकित विप्लव का बीजमंत्र है। पूर्व भारतेंदु युग से चली आ रही हिंदी ग़ज़ल की परंपरा को अत्याधुनिक युग में दुष्यंत कुमार ने सामाजिक चेतना से संबद्ध करके विकास यात्रा को नई दिशा दी, यही कारण है की हिंदी ग़ज़ल रनिवासी विथिकाओं से निकलकर तपती हुई सड़क पर नंगे चल रहे आदमी के साथ-साथ चल रही है। हिंदी ग़ज़ल के उन्नयन एवं विकास में विभिन्न स्तरीय, माध्यम एवं लघु पत्र-पत्रिकाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है। दुष्यंत कुमार के समकालीन और परवर्ती कवियों का लंबा काफिला हिंदी ग़ज़ल की रथयात्रा में समर्पित एवं संकल्पित भाव से सम्मिलित है।

"हिंदी कविता की जितनी विधाएं हैं ग़ज़ल उन सब की मालकिन है। इसका असर व्यापक जन समूह पर है। जिसे एक बार ग़ज़ल का स्वाद लग जाता है वह उम्र भर उसे नहीं भूलता बल्कि उसका दीवाना और शौदाई बन जाता है। यही कारण है की माजदा असद ने ग़ज़ल को दुल्हन मानते हुए कहा था कि ग़ज़ल वह विधा है जिसे चाहने वाले घर के बड़े, बूढ़े, बच्चे सब हैं।"[4] कह सकते हैं की समकालीन कविता की बोझिलता को बहुत हद तक ग़ज़ल ने दूर कर दिया है। हिंदी ग़ज़ल आम जन की भाषा में अभिव्यक्त होती है, इसलिए वह कविता की सबसे सशक्त विधा बन गई। बदलते वक्त के साथ अन्य वैविध्य आता गया। महिला गजलकार भी ग़ज़ल के बदलते स्वरूप के साथ हर पहलू पर अपनी बात रखती आई हैं। उन्होंने भी ग़ज़ल के परंपरावादी विषयों से आगे बढ़कर वर्तमान से जुड़ने की सफल कोशिश की है। उन्होंने अपने अंतर्मन की व्यथा, अपनी अस्मिता और स्त्री जाति के संघर्ष और निज अनुभवों के साथ साथ जीवन की विसंगतियों, विरोध, अत्याचार, शोषण, असमानता, सियासी दांव पेंच और मानवता पर मंडरा रहे खतरों पर अपनी धारदार कलम चलाई है। आज की नारी अपने अधिकारों के प्रति भी सजग है। 21वी सदी की नारी के अनुरूप वर्तमान हिंदी ग़ज़ल का मिजाज और तेवर बदला है। भूमंडलीकरण के इस दौर में स्त्री का जीवन चारदीवारी तक ही सिमट कर नहीं रह गया बल्कि उसे समाज के हर प्रकार के लोगों के साथ व्यवहार करना होता है। इस प्रकार हम देखते हैं की समकालीन हिंदी ग़ज़ल में स्त्री के परंपरागत सौंदर्य का वर्णन करने की अपेक्षा उसके जीवन के कटु सत्यों और अन्य अनेक पहलुओं को लेकर भी गजलकारों ने बात की है। आज स्त्री अपनी अस्मिता की तलाश में पुरुष वर्चस्व के सामने चुनौती खड़ी कर रही है। आज के दौर में नारी के प्रति लोगों के दृष्टिकोण के साथ साथ परिस्थितियों में भी परिवर्तन हो रहा है। नारी की स्वतंत्रता, सुरक्षा और उसके अस्तित्व के लिए आज लेखन के माध्यम से लोगों को जागरूक किया जा रहा है लेकिन एक बात तो निश्चित है कि नारी को स्वयं पुरुष के साथ अपने सहधर्मिणी होने की प्रामाणिकता सिद्ध करनी होगी। समकालीन हिंदी ग़ज़ल में स्त्री अस्मिता तथा अस्तित्ववादी चिंतन पर विचार करने के बाद यह तथ्य सामने आते है की हिंदी ग़ज़ल ने नारी के प्रति अपना दृष्टिकोण तो बदला है परंतु अभी भी स्त्री जीवन के कई ऐसे पक्ष हैं जिन्हे ग़ज़ल को अपनी संवेदना के

माध्यम से आमजन को साक्षात्कार कराना है।

इस तरह हिंदी ग़ज़ल की इस परंपरा का श्री गणेश तेरहवीं शताब्दी में अमीर खुसरो, कबीर और उनके समकालीन कवियों द्वारा स्फुट रूप में हुआ। अमीर खुसरो की अनेक गजलों का रंग हिंदी ग़ज़ल में निहित हिंदी की संभावनाओं को स्पष्ट करता है। कालांतर में भारतेंदु बाबू हरिश्चंद्र से लेकर निराला, शमशेर और दुष्यंत तक हिंदी की सुदीर्घ परंपरा का विकास हुआ और उन्होंने अपनी गजलों में हिंदुस्तान के सर्वहारा वर्ग द्वारा भोगे हुए यथार्थ तथा आपातकालीन व्यवस्था के खोखले संदर्भों का सच्चा एवं सटीक चित्रण करके उसे सामाजिक चेतना से जोड़ने का सार्थक प्रयास किया। बदलते समय के साथ ग़ज़ल विधा में भी महिला लेखिकाओं का हस्तक्षेप हुआ और यह परंपरा आगे बढ़ती गई। महिलाएं रचनाकार ने भी इस विधा में अपनी लेखनी से इसे समृद्ध किया। निसंदेह हिंदी ग़ज़ल एक संभावनाशील विधा है और नए संभावनाशील यात्रियों का मार्गदर्शन करने में समर्थ होगा।

संदर्भ सूची :-

1- हिंदी आलोचना की परिभाषिक शब्दावली,डॉ.अमरनाथ,राजकमल प्रकाशन,पहला छात्र संस्करण,दूसरी आवृत्ति,2015, पृ. सं.- 62
2- हिंदी साहित्य का इतिहास, रामचंद्र शुक्ल, नागरीप्रचारिणी सभा प्रकाशन, छठां संस्करण, पृष्ठ संख्या - 01
3- हिंदी ग़ज़ल उद्भव और विकास, डॉ. रोहिताश्व अस्थाना, सुनील साहित्य सदन, संस्करण : 2017, पृष्ठ संख्या - 09
4- डॉ. भावना का ग़ज़ल साहित्य चिंतन और दृष्टि, डॉ. जियाउर रहमान जाफरी, श्वेतवर्ण प्रकाशन, पहला संस्करण, 2024, पृष्ठ सं.- 09

सहायक ग्रंथ/स्रोत सूची :-

1- डॉ. रोहिताश्व अस्थाना, हिंदी ग़ज़ल उद्भव और विकास, दिल्ली, सामयिक प्रकाशन
2- डॉ. विनीता गुप्ता, हिंदी ग़ज़ल की विकास यात्रा, गाजियाबाद, मनीषा प्रकाशन
3- सरदार मुजावर, हिंदी ग़ज़ल का वर्तमान दशक, नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन
4- ज्ञानप्रकाश विवेक, हिंदी ग़ज़ल की विकास यात्रा, चंडीगढ़, हरियाणा साहित्य अकादमी
5- चानन गोविंदपुरी, ग़ज़ल एक अध्ययन, नई दिल्ली, सीमांत प्रकाशन
6- अशोक अंजुम, नई सदी के प्रतिनधि ग़ज़लकार, अलीगढ़, संवेदना प्रकाशन
7- डॉ जियाऊर रहमान जाफरी, डॉ भावना का ग़ज़ल साहित्य चिंतन और दृष्टि,नई दिल्ली, स्वेतवर्ण प्रकाशन
8- Youtube:- https://youtu.be/5qGMWNUaodE?si=Tsl4F4aa3xtcPp_M
https://youtu.be/gfKQjPZiojA?si=5EueiEOeMpA69VUP
https://www.youtube.com/live/bL_V82RnM6s?si=iUq8KNsm6D2aWB67

●